

ऋषि-मुनियों से भेट

अत्रि मुनि से विदा लेकर राम ने दंडक वन में प्रवेश किया। बड़ा हरा-भरा और घना वन था। भाँति-भाँति के जीव जन्तुओं और पशु-पक्षियों की आवाजें सुनाई पड़ रही थीं। जहाँ-तहाँ मुनियों के आश्रम थे, जिनमें से वेद ध्वनि आती थी।

श्रीराम के आने का समाचार पाकर ऋषि मुनि बड़े प्रसन्न हुये और उन्होंने राम को अपना दुःख बताया। मुनि बोले- “यहाँ वन में अनेक राक्षस तरह-तरह का रूप बनाकर घूमते रहते हैं और अवसर पाकर हम लोगों पर हमला कर देते हैं।” राम ने उनकी बातें ध्यान से सुनीं और उन्हें ढाढस दिया। वह रात उन्होंने मुनियों के आश्रम में ही बिताई।

अगले दिन राम, लक्ष्मण और सीता ने और भी घने वन में प्रवेश किया। कुछ दूर जाने पर एक विशाल शरीर और लंबी बांहों वाला दानव मिला। उसने झपटकर सीता को पकड़ लिया और राम-लक्ष्मण से डपटकर बोला “ढोगियों! तुम कौन हो? मुनि का वेश बना लिया है और ऐसी सुन्दर स्त्री लिए घूम रहे हो! यह मेरे काम की है, भाग जाओ।”

राम ने पूछा- “तुम कौन हो?” वह गरज कर बोला- मैं महाबली विराध हूँ। जल्दी भागो, नहीं तो फाड़ कर खा जाऊँगा। राम-लक्ष्मण ने उस पर बाणों की वर्षा शुरू कर दी। विराध क्रोध से पागल हो गया। बाणों की वर्षा कुछ परवाह न करके वह राम-लक्ष्मण पर झपटा। दोनों भाइयों को अपनी लम्बी भुजाओं में जकड़कर वह एक ओर चल पड़ा। यह देखकर सीता जोर-जोर से रोने चिल्लाने लगी। राम-लक्ष्मण ने उसके दोनों हाथ मरोड़ कर तोड़ डाले। तब राक्षस जमीन पर गिर पड़ा। राम-लक्ष्मण ने एक बहुत बड़ा गड्ढा खोदा और ठोंक-पीटकर उसे जिन्दा ही जमीन में गाड़ दिया।

वहाँ से चलकर राम शरभंग मुनि के आश्रम में पहुँचे। शरभंग मुनि ने कहा- “आपके दर्शन से मेरी लालसा पूरी हुई। आपने अच्छा किया कि यहाँ आ गए। ऋषि-मुनियों की रक्षा हो जाएगी। आपको देखने के बाद अब मैं और कुछ नहीं देखना चाहता।” इतना कहकर शरभंग मुनि जलती हुई चिता में समा गए। अनेक ऋषि-मुनि वहाँ जमा हो गए। उन्होंने हड्डियों के ढेर दिखाकर राम से कहा कि “ये ऋषियों के कंकाल हैं, जिनको राक्षसों ने खा डाला है।” राम ने कहा कि- “डरो नहीं मैं राक्षसों का नाश कर दूँगा।”

अब राम सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में पहुँचे। सुतीक्ष्ण मुनि अगस्त्य ऋषि के शिष्य थे और भगवान के बड़े भक्त थे। श्रीराम का स्वागत सत्कार कर उन्होंने भी राक्षसों के अत्याचार की कहानियाँ राम को सुनाई। उस दिन राम-लक्ष्मण और सीता सुतीक्ष्ण के आश्रम में ही टिक गए।

अगले दिन वे फिर चल पड़े और दंडक वन के विभिन्न स्थानों में रहे। सीताजी कहती, “आर्य पुत्र! ऋषि मुनियों के कारण वन में रहकर राक्षसों से वैर मोल लेना मुझे ठीक नहीं जान पड़ता।” राम ने उत्तर दिया- “भद्रे! हम लोग क्षत्रिय हैं। हमारा धर्म है पीड़ितों की रक्षा करना, शरण में आए हुए की मदद करना। ऋषियों को मैं भगवान् -भरोसे कैसे छोड़ सकता हूँ।”

इस प्रकार दंडक वन में घूमते-घूमते दस वर्ष बीत गए। लौटकर वे फिर सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में आ गए। सुतीक्ष्ण ने उन्हें अगस्त्य ऋषि से मिलने का परामर्श दिया।

सुतीक्ष्ण के आश्रम से पांच योजन दूर आर्य श्रेष्ठ अगस्त्य ऋषि का आश्रम था। राम-लक्ष्मण और सीता उसी ओर चल दिए। मार्ग में श्रीराम ने बताया कि भगवान् अगस्त्य ही सबसे पहले विन्ध्याचल को पारकर यहां आए। उन्होंने ही दक्षिण दिशा का द्वार खोला। उनसे राक्षस डरते हैं और उन्हीं के भरोसे दूसरे ऋषि यहां आ पहुंचे हैं। उनके दर्शन कर आज हम धन्य होंगे। उन्हीं की आज्ञा से हम वनवास का शेष समय काटेंगे।

श्रीराम के आने का समाचार पाकर अगस्त्य ऋषि बाहर आए। राम, लक्ष्मण और सीता ने उनके चरणों में प्रणाम किया। मुनि ने सबको आसन देकर कंद-मूल-फल खाने को दिए। राम को तरह-तरह के उपदेश देकर बोले- “अच्छा किया, आप यहाँ तक आ गए। मैं स्वयं आपसे मिलना चाहता था। आपका सब हाल मैं जान चुका हूँ आपकी शक्ति भी जानता हूँ। राक्षसों को मारकर जनस्थान की रक्षा करना आपका काम होगा, जिससे ऋषि-मुनि यहां बेखटके जप-तप कर सकें।” यह कहकर अगस्त्य ऋषि ने दिव्य अस्त्र-शस्त्र राम को दिए। विष्णु से प्राप्त महाधनुष दिया, ब्रह्मा से मिला हुआ एक अमोघ बाण दिया और इन्द्र से मिले हुए तरकश दिए जो सदा बाणों से भरे रहते थे। सोने की मूठ वाला खड्ग भी उन्होंने श्रीराम को दिया। श्रीराम ने इन दिव्य अस्त्रों को सिर से लगाकर ग्रहण किया। तब मुनि ने राम से कहा- “यहां से दो योजन दूर गोदावरी नदी के किनारे पंचवटी नामक एक स्थान है। वनवास का शेष समय वहीं व्यतीत करो।”

सीता और लक्ष्मण सहित रामचन्द्र जी पंचवटी की ओर चल दिए। मार्ग में उनको भयंकर शरीर वाला एक गिद्ध मिला। दोनों भाइयों ने समझा कि वह कोई राक्षस है। परंतु गिद्धराज ने उन्हें पहचान लिया और वह मधुर वाणी में बोला, “मेरा नाम जटायु है। मैं तुम्हारे पिता दशरथ का मित्र हूँ। वनवास में मैं तुम्हारी हर तरह से सहायता करना चाहता हूँ।” श्रीराम ने पिता के समान उनको आदर दिया और उनको साथ लेकर वे पंचवटी की ओर गए।

खर-दूषण से युद्ध

पंचवटी पहुँचकर लक्ष्मण ने गोदावरी नदी के किनारे बड़ी सुन्दर कुटी बना ली। सीता जी को वह कुटी बड़ी अच्छी लगी। सीता और राम दोनों ने लक्ष्मण को अनेक आशीर्वाद दिए। पंचवटी का वास राम को बहुत अच्छा लगा। वे गोदावरी के किनारे-किनारे कुँजों और वनों की शोभा निहारते फिरते। लक्ष्मण उनके लिए फल मूल इक्कट्टा करते और रात में कुटी पर पहरा देते। इस तरह तीन वर्ष हो गए।

एक दिन राम-लक्ष्मण और सीता अपनी पर्णकुटी के सामने बैठे हुए थे। इतने में रावण की बहन शूर्पणखा उधर आ निकली। राम के रूप को देखकर वह विकल हो गई। उसका मन काबू के बाहर हो गया। सुन्दर वेश बनाकर बन-ठनकर वह राम के पास आई और बोली- “हे रूपनिधान! सुनो, मैं विश्व-विजयी लंका के महाप्रतापी राजा रावण की बहन हूँ। संसार में मेरे समान कोई दूसरी सुन्दरी नहीं है।”

तीनों लोको में खोज हुई, पर मेरे अनुरूप कोई वर नहीं मिला। इसलिए अब तक कुंवारी ही हूँ। तुम्हें देखकर मन में आया कि विवाह कर लूँ। मेरी तुम्हारी जोड़ी अच्छी रहेगी। तुम्हारी यह स्त्री बड़ी अभागिन और कुरूप है। इसे छोड़ो और मेरे साथ रहकर महलों में भोग-विलास करो।” राम को उसकी निर्लज्जता

बहुत बुरी लगी। परंतु वे हंसकर बोले- देवी! तुम लक्ष्मण के पास क्यों नहीं जाती? अभी उसके साथ कोई स्त्री नहीं है और वह सुंदर भी है।" तब वह लक्ष्मण के पास गई। लक्ष्मण ने कहा, "मैं सेवक हूँ। मेरी स्त्री होने पर तुम्हें दासी बनकर रहना पड़ेगा। राम के पास ही जाओ। वे राजा है।"

शूर्पणखा फिर राम के पास पहुंची और राम ने उसे फिर लक्ष्मण के पास लौटा दिया। इस प्रकार जब वह कई बार आई-गई तब खिसिया गई और सीता की ओर मुँह फाड़कर दौड़ी। राम का संकेत पाकर लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट लिए। वह जिधर से आई थी उधर ही रोती-चिल्लाती भाग गई।



पुनि फिर राम निकट सो आई, प्रभु लछिमन पंह बहुरि पठाई।

लछिमन कहा तोहि सो बरई, जो तून तोरि लाज परिहरई ॥

रोती चिल्लाती शूर्पणखा अपने भाई खर और दूषण के पास गई। वे रावण के सौतेले भाई थे और उसी के आदेश से जन स्थान में सेना सहित रहते थे। त्रिशिरा उनका सेनापति था। बहन की दुर्दशा देखकर खर ने शूर्पणखा से सारा हाल मालूम किया और अपने सैनिकों की एक टोली राम को मारने के लिए शूर्पणखा के साथ भेज दी। राम ने बात ही बात में सब राक्षसों को मार डाला। शूर्पणखा फिर खर के बल-पौरुष, को धिक्कारने लगी। एक मनुष्य द्वारा अपना अपमान देख खर को बहुत क्रोध आया। अपनी समस्त सेना लेकर उसने राम पर चढ़ाई कर दी। उधर बड़ी भारी सेना आते देखकर राम ने सीता जी को लक्ष्मण के साथ सुरक्षित स्थान पर भेज दिया और स्वयं युद्ध के लिए तैयार हो गए।

राक्षसी सेना ने पंचवटी को चारों ओर से घेर लिया। राम ने देखते-देखते हजारों राक्षसों को मार डाला। दूषण और त्रिशिरा के मारे जाने पर महारथी खर राम से युद्ध करने के लिए आया। खर ने घोर संग्राम किया। एक बार तो उसने राम का कवच ही काट डाला और उनको लहू-लुहान कर दिया। राम ने क्रोधित होकर उसके साथी और घोड़ों को मार डाला और रथ को चूर-चूर कर दिया। तब खर गदा लेकर घोर संग्राम करने लगा। शत्रु को महाप्रबल देखकर राम ने अगस्त्य ऋषि का दिया हुआ वैष्णव धनुष हाथ में



नाक कान बिनु भड़ बिकरारा, जनु ख्रव सैल गेरु कै धारा।
खर-दूषण पहिं गड़ बिलपाता, धिग-धिग तव पौरुष बल भ्राता ॥

लिया और उस इन्द्रबाण रखकर पूरी शक्ति से चला दिया। बाण खर की छाती में लगा। उसका हृदय फट गया। सवा घंटे के युद्ध में अकेले राम ने चौदह सहस्र राक्षस मार डाले। जनस्थान से राक्षसों का भय सदा के लिए मिट गया।

खर के मारे जाने पर देवताओं ने आनंदित होकर फूलों की वर्षा की और तरह-तरह के बाजे बजाए। अगस्त्य ऋषि ने भी आकर राम चन्द्र जी को बधाई दी। इतने में सीता सहित लक्ष्मण भी आ गए। राम को सकुशल देखकर दोनों बहुत हर्षित हुए।

मारीच की माया और सोने का हिरण

शूर्पणखा का बड़ा भाई रावण लंका में राज करता था वह अपने बल प्रताप के लिए तीनों लोकों में विख्यात था। देवता उसके नाम से ही थर-थर कांपते थे। कुबेर से उसने पुष्पक विमान छीन लिया था। खर-दूषण के मारे जाने पर शूर्पणखा समुद्र पार कर रोती चिल्लाती रावण के पास पहुंची और बोली- “भाई तेरे पौरुष को धिक्कार है। तेरे रहते मेरी दुर्गति हो रही है। अब तू कैसे मुँह दिखाएगा।” इतना कहकर शूर्पणखा पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

रावण ने शूर्पणखा को उठाया और पूछा- “शूर्पणखा ने सारा हाल कह सुनाया। राम-लक्ष्मण के बल और रूप की प्रशंसा करते हुए उसने कहा कि उनके साथ एक परम सुन्दर स्त्री भी है। उसका नाम सीता है। मैंने समझा ऐसी सुन्दर स्त्री लंका के राजमहल के योग्य है। उसे मैं तुम्हारे लिए लाना चाहती थी। जब उन्हें मालूम हुआ कि मैं तुम्हारी बहन हूँ, तब वे मुझसे हंसी करने लगे और लक्ष्मण ने मेरे नाक-कान

काट लिए। मेरी नाक जो गई वह तो लौट नहीं सकती, उस सुन्दरी को अवश्य ले जाओ। वैरी की चुनौती स्वीकार करो।

खर-दूषण की मृत्यु के समाचार से रावण पहले तो कुछ घबराया फिर शूर्पणखा को समझा- बुझाकर सीता को ले आने का निश्चय कर लिया। उसने तुरंत अपना आकाशगामी रथ मंगाया और उसमें अकेले ही बैठकर समुद्र पार मारीच के पास पहुंचा। विश्वामित्र के आश्रम में तप करने लगा था। मारीच ने राक्षस राजा का उचित सत्कार किया और इस तरह आने का कारण पूछा। रावण ने मारीच को पूरी कहानी बताकर अपना आशय बताया और कहा कि सीता हरण में तुम मेरी सहायता करो। सोने का हिरन बनकर तुम राम-लक्ष्मण को आश्रम से दूर ले जाओ। तभी मैं सीता को हर लाऊंगा। स्त्री के वियोग में राम या तो अपने आप मर जाएगा या उसका बल क्षीण हो जाएगा। तब मैं उसे सहज ही जीत लूंगा।



सीता परम रूचिर मृग देखा, अंग-अंग सुमनोहर बेखा।
सुनहु देव रघुवीर कृपाला, एहि मृग कर अति सुंदर छाला ॥

रावण की बात सुनकर मारीच के प्राण सूख गए। उसने राम के बाण की घटना सुनाकर कहा कि अब तो जब कोई राम का नाम लेता है अथवा 'र' अक्षरवाला कोई शब्द 'रथ' 'राजा' 'रत्न' आदि बोलता है, तो 'र' सुनते ही मुझे कंपकंपी लग जाती है। मेरी बात मानें तो राम से बैर न करें। मारीच की बात सुनकर रावण बड़ा क्रोधित हुआ और बोला, "मैं यहां तेरे उपदेश सुनने नहीं आया। आज्ञा देने आया हूं। हो सकता है कि राम के बाण से तू बच जाए। लेकिन यदि मेरी बात नहीं मानी तो मैं तुझे अभी मार डालूंगा।" मारीच को विवश होकर रावण की बात माननी पड़ी। रथ में बैठकर दोनों पंचवटी पहुंचे और मारीच सोने का हिरन बनकर राम की कुटी के आस-पास घूमने लगा रावण पेड़ों के झुरमुट में छिप गया।

सोने के विचित्र हिरन को देखकर सीता उस पर मुग्ध हो गई। उन्होंने राम से उसको पकड़ने का आग्रह किया। राम को कुछ संदेह तो हुआ, परन्तु सीता के कहने पर वे उसके पीछे चल पड़े। लुकता-छिपता मारीच राम को बहुत दूर ले गया। उसे पकड़ने का राम ने बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह पकड़ में नहीं आया। तब राम ने एक कठोर बाण उस पर छोड़ दिया। बाण लगते ही मारीच गिर पड़ा और अपने असली रूप में आ गया। राम की बोली में वह जोर से चिल्लाया- “हे सीता, हे लक्ष्मण! मैं मरा।”

राम की पुकार सुनते ही सीता लक्ष्मण से बोली- “भाई संकट में हैं जल्दी जाओ।” लक्ष्मण ने कहा- “माता आप चिंता न करें। आर्य राम का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। जो आवाज सुन पड़ी है, वह बनावटी मालूम पड़ती है। खर-दूषण के मारे जाने पर राक्षस बदला लेने पर उतारू हैं। वे हर तरह का छल कर सकते हैं।

जब लक्ष्मण किसी तरह उन्हें अकेला छोड़ने को तैयार न हुए तो सीता अनेक प्रकार के दुर्वचन कहने लगी। वे बोली, “तुम भी भरत के गुप्तचर मालूम पड़ते हो। हो सकता है मेरे ऊपर भी तुम्हारी कुदृष्टि हो। अगर आर्यपुत्र को कुछ हो गया तो मैं गोदावरी नदी में डूब मंरूगी।”

होनी प्रबल होती है। इन कठोर वचनों से आहत होकर लक्ष्मण राम की खोज में चल पड़े। रावण ऐसे ही अवसर की तलाश में छिपा बैठा था। सन्यासी का वेश बनाकर वह सीताजी की कुटी पर वेद मंत्र बोलते हुए आ गया। सीता जी ने उचित अतिथि सत्कार किया। तब रावण ने अपना नाम बताया और लंका चलने के लिए सीता जी से कहा। सीताजी ने उसे डांटा और राम का डर दिखाया। रावण ने समय खोना उचित न समझा। उसने झपट कर सीता जी को उठा लिया और आकाश यान में बैठाकर लंका की ओर चल दिया। सीता जी ‘हे राम’ ‘लक्ष्मण’ चिल्लाती हुई रोती जाती थी। प्रत्येक वृक्ष, पहाड़, पशु, पक्षी से वे निवेदन करती कि राम को बता दे कि लंका का राजा रावण तुम्हारी प्यारी रानी को पकड़ ले गया है।

गिद्धराज जटायु ने सीता का रोना सुना तो उसने अपने कोटर से निकल कर रावण को ललकारा और पूरी ताकत से वह रावण पर टूट पड़ा। उसने रावण का कवच काट डाला और उसे घायल कर दिया।



तब सक्रोध निसिचर खिसिआना, काढ़ेसि परम कराल कृपाना।

कटिसि पंख खग धरनी, सुमिरि राम करि अद्भुत करनी ॥

अरण्य-कांड

जटायु ने रावण के धनुष बाण काट डाले और उसका रथ भी तोड़-फोड़ डाला। तब रावण ने जटायु के पंख काट डाले और सीता को लेकर लंका की ओर चल दिया।

रास्ते में सीता ने एक पहाड़ की चोटी पर कुछ बंदरों को बैठे देखा। रावण की आंख बचाकर उन्होंने कुछ आभूषण एक कपड़े में बांधे और पोटली को पहाड़ की चोटी पर गिरा दिया। लंका पहुंच कर रावण ने सीता को अपना सारा राजमहल दिखाया और कहा कि यह सब तुम्हारा ही है। तुम लंका की पटरानी बनने को तैयार हो तो सब रानियां तुम्हारी सेवा में रहेगी। परंतु सीता किसी तरह न मानी। वे बराबर उसे डांटती रही। तब रावण ने सीता को अशोक वाटिका में रखकर उन पर कड़ा पहरा लगा दिया और कहा- "मैं एक वर्ष का समय देता हूं। यदि तू न मानी तो तेरा वध कर दिया जाएगा।" श्रीराम का ध्यान करते हुए सीता अपने दिन रो-रोकर काटने लगी।

राम विरह और सीता की खोज

मारीच को मारकर जब राम लौट रहे थे तो लक्ष्मण उनको सामने से आते हुए दिखाई दिए। लक्ष्मण को देखकर उनके मन में तरह-तरह की शंकाएं होने लगीं। मारीच का छल वे देख ही चुके थे। लक्ष्मण को देखकर रुष्ट होकर बोले- "मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके तुमने ठीक नहीं किया। लक्ष्मण ने सब बातें बताई। राम ने फिर भी कहा कि तुम्हें समझ से काम लेना था। मेरा मन कह रहा है कि सीता अब आश्रम में नहीं है।

दोनों भाई उदास मन आश्रम में पहुंचे तो देखा वहां सन्नाटा है। वे 'सीता, सीता' कहकर पुकारते पर कहीं से कोई उत्तर न आता। राम बोले "देखो, सीता को कोई चुरा तो नहीं ले गया, या कहीं फूल चुनने निकल गई है। दोनों भाइयों ने बाहर-भीतर सब जगह खोज की। उन्होंने हर पेड़ से पूछा, हर शिला से पूछा, पशु-पक्षियों से पूछा, पर सीता का पता किसी ने नहीं बताया। वे हाथ जोड़कर सूर्य से पवन से, दसों दिशाओं से सीता का पता पूछते। शोक से व्याकुल होकर राम रोने लगे। पंचवटी के हिरन, गोदावरी नदी का सुहाना तट उन्हें दुःखदायी लगने लगा। राम बहुत दःखी होकर लक्ष्मण से बोले- "मैं अब प्राण देने जा रहा हूं। तुम अयोध्या लौट जाओ।"

लक्ष्मण ने समझा-बुझाकर राम को धैर्य बंधाया और सीता की खोज करने की सलाह दी। दोनों भाइयों ने एक-एक पहाड़ और एक-एक कंदरा खोज डाली। खोजते-खोजते वे दक्षिण की ओर बढ़ने लगे। वे कुछ ही दूर गए होगें कि उन्हें सीता के पैरों के निशान दिखाई दिए। दूटा हुआ कवच और धनुष भी उन्होंने देखा। एक आकाशयान भी दूटा हुआ था। लगता था वहां कोई युद्ध हुआ है। तभी उन्हें खून से लथपथ जटायु दिख पड़ा। जटायु ने भी राम को देख लिया। उसके मुँह से रुधिर गिर रहा था, फिर भी वह हिम्मत करके बोला- "तुम जिस देवी की खोज कर रहे हो, उसे लंका का राजा रावण हर ले गया है। उसी ने मेरी यह दुर्गति कर दी है। उसकी जबान लड़खड़ाने लगी और आंखें बंद हो गई। राम ने धनुषबाण फेंककर गिद्धराज को गोदी में उठा लिया और उससे विलाप करने लगे। उन्होंने लक्ष्मण से कहा- "देखो, इस पक्षी ने भी हमारे लिए प्राण दे दिए। यह संत है। हमारे पिता का मित्र भी है। तुम वन से लकड़ियाँ बीन लाओ। मैं इसका दाह-संस्कार करूँगा।

जटायु को श्रद्धांजलि देकर राम-लक्ष्मण एक घने जंगल में पहुँचे। सामने देखा तो कबंध नाम का एक बहुत बड़ा दानव उनका रास्ता रोके खड़ा था। उसका पेट बहुत बड़ा था, सिर था ही नहीं। उसने एक-एक हाथ से दोनों भाइयों को पकड़ लिया और अट्टहास करते हुए बोला "भगवान ने आज घर बैठे भरपेट भोजन दिया है। मैं कई दिनों से भूखा था। राम-लक्ष्मण ने अपनी-अपनी तलवारें निकाली और उसकी

भुजाएं काट डाली। कंबध व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। राम के स्पर्श से उसकी बुद्धि शुद्ध हो गई। उसने राम-लक्ष्मण के बारे में जानना चाहा। राम ने उसे अपने बारे में सब बताया। कंबध बोला- “मेरा दाह संस्कार कर दें तो बड़ी कृपा होगी। उसने यह भी कहा कि सीता के बारे में मुझे कुछ मालूम तो नहीं है, परंतु मैं एक उपाय बताता हूं। यहां से दक्षिण-पश्चिम की ओर ऋष्यमूक नाम का एक पर्वत है। वहां मंत्रियों सहित सुग्रीव नामक एक वानर रहता है। उससे मिलिए। उसकी मदद से सीता का पता लग जाएगा। पहले आप को पंपा नाम का सरोवर मिलेगा। सरोवर के किनारे मतंग ऋषि का आश्रम है। आश्रम में ऋषि की शिष्या शबरी होगी। उससे भी मिलें। इतना कहकर कंबध मर गया। राम-लक्ष्मण ने उसका दाह-संस्कार कर दिया। राम के स्पर्श से वह शाप मुक्त हो गया। एक ऋषि के शाप से वह दानव हो गया था और इन्द्र के वज्र की चोट से उसका सिर पेट में घुस गया था। तभी उसका नाम कंबध पड़ गया था। चलते-चलते राम शबरी के आश्रम में पहुँचे। शबरी ने दौड़ कर राम के पैर छुए, चरण धोए, आसन दिया और मीठे-मीठे फल मूल खाने को दिए वह बोली- “ऋषि ने मुझे बताया था कि चित्रकूट से चलकर राम किसी न किसी दिन अवश्य इधर आएंगे।” श्री राम ने बड़े प्रेम से शबरी के दिए फल खाये। श्रीराम ने शबरी से सीताजी का पता पूछा। शबरी ने भी बताया कि सुग्रीव से मित्रता कीजिए। सीता की खोज में वह अवश्य सहायक होगा। तब शबरी ने श्रीराम को मतंग ऋषि का आश्रम और मतंग वन दिखाया और ऋषि के चमत्कार की बहुत-सी कथाएं सुनाई। फिर राम की अनुमति लेकर उसने शरीर त्याग कर दिया। शबरी से मिलकर राम के मन को बड़ी शांति मिली और व्याकुलता जाती रही।

प्रश्न

1. श्री राम ने राक्षस-वध की प्रतिज्ञा क्यों की ?
2. अगस्त्य ऋषि कौन थे ? उन्होंने राम लक्ष्मण को क्या परामर्श दिया और उनके कार्य में क्या सहायता की ?
3. खर-दूषण और राम के युद्ध का वर्णन करो।
4. रावण ने किस प्रकार सीता का हरण किया ?
5. राम द्वारा सीता की खोज का संक्षेप में वर्णन करो।